जूँ और टू

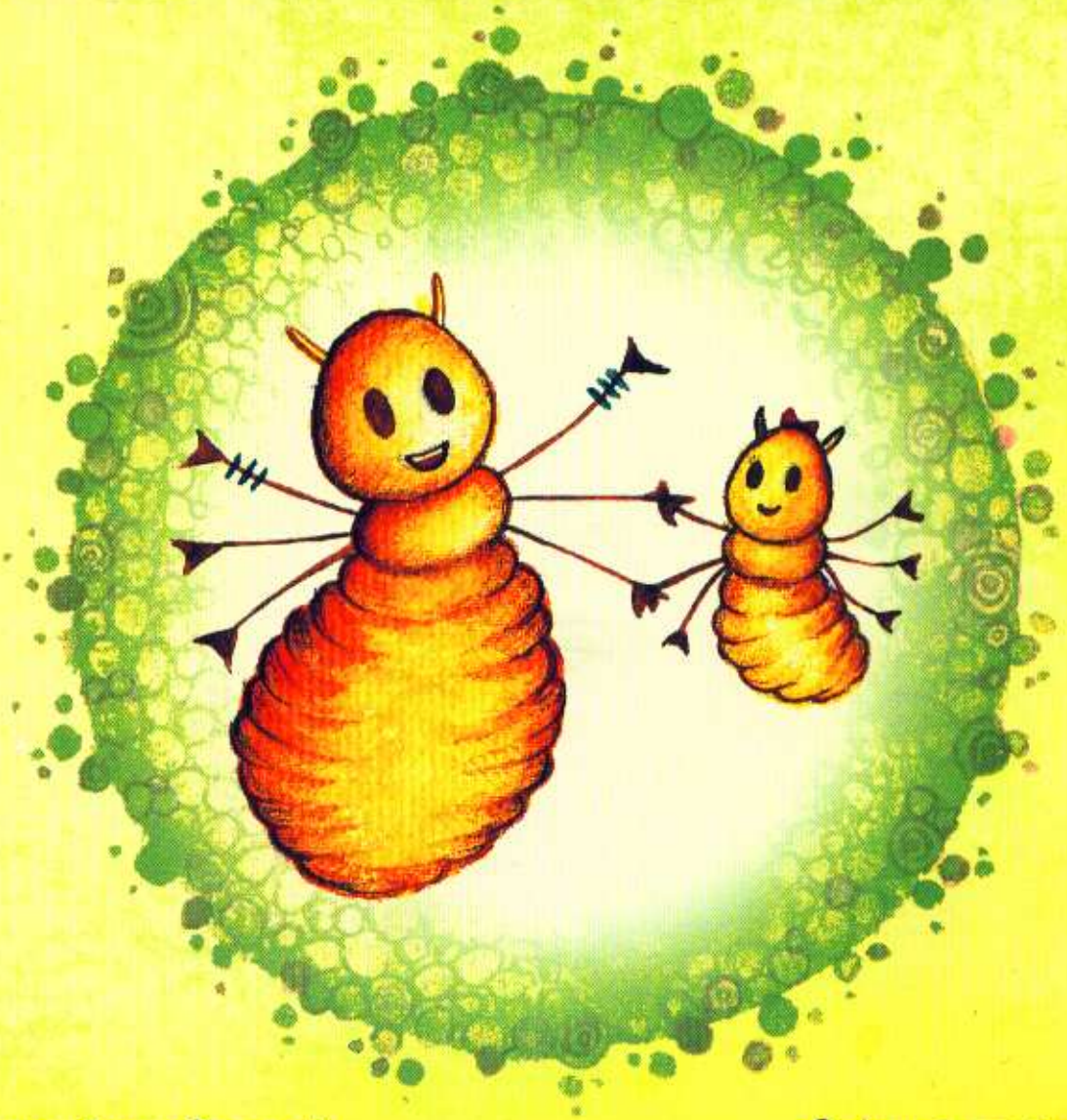

एक मराठी पारम्परिक कहानी

चित्रांकनः सुजाता भागवत

एकलव्य का प्रकाशन

जूँ और टू

एक मराठी पारम्परिक कहानी

चित्रः सुजाता भागवत

एकलव्य का प्रकाशन

एक थी जूँ।

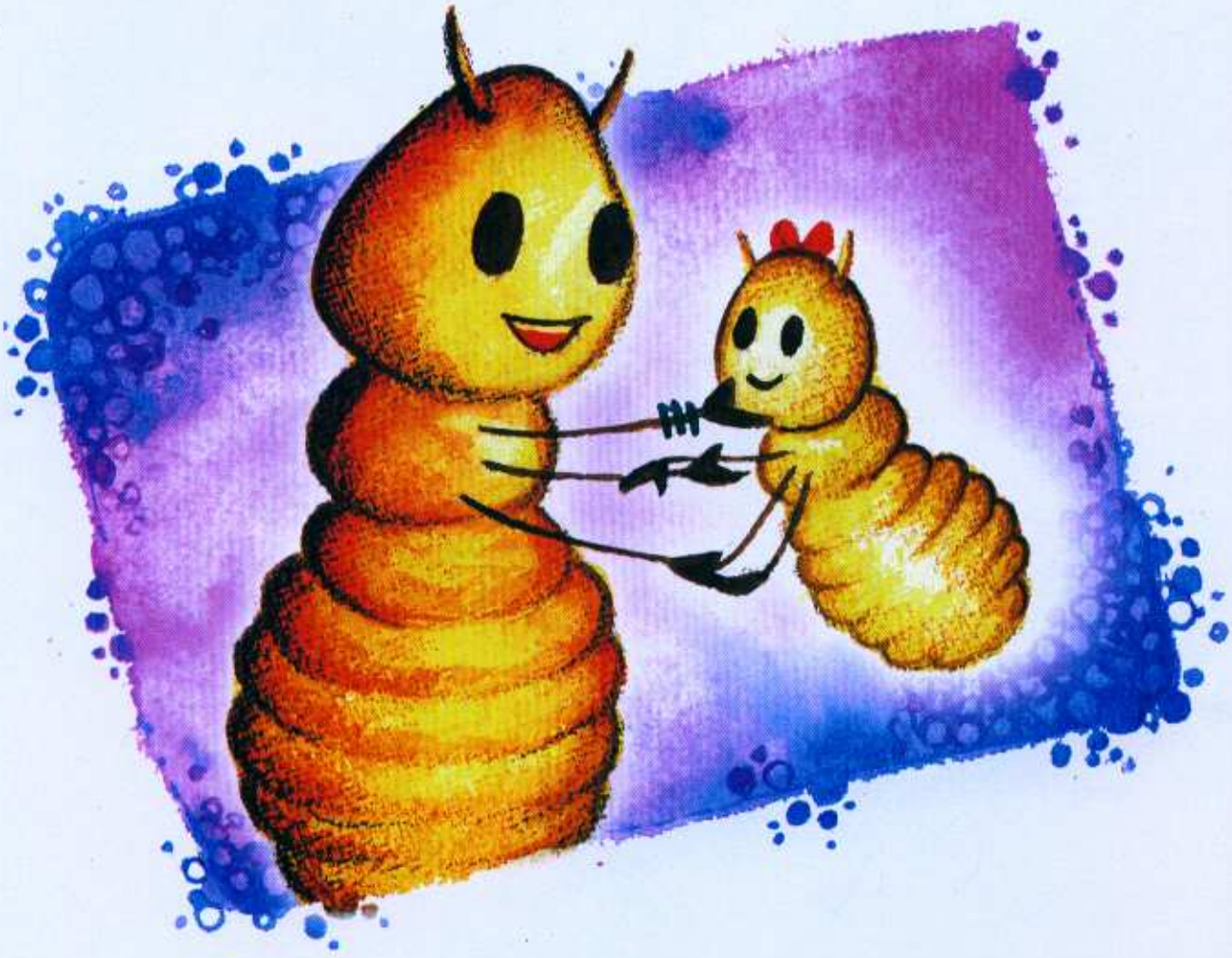

उसे जन्मी टू।

वह गई खेलने।

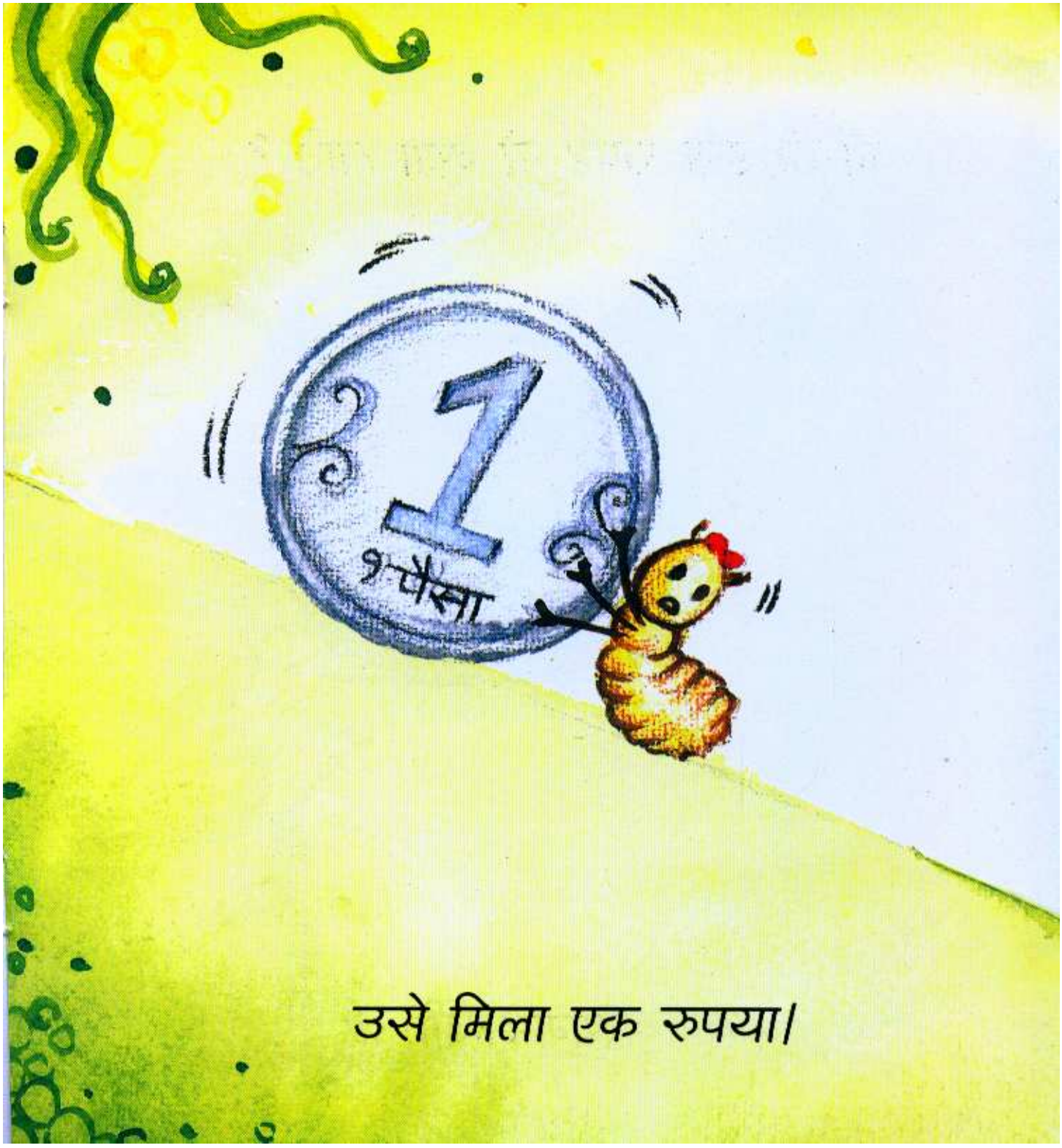

उसे मिला एक रुपया।

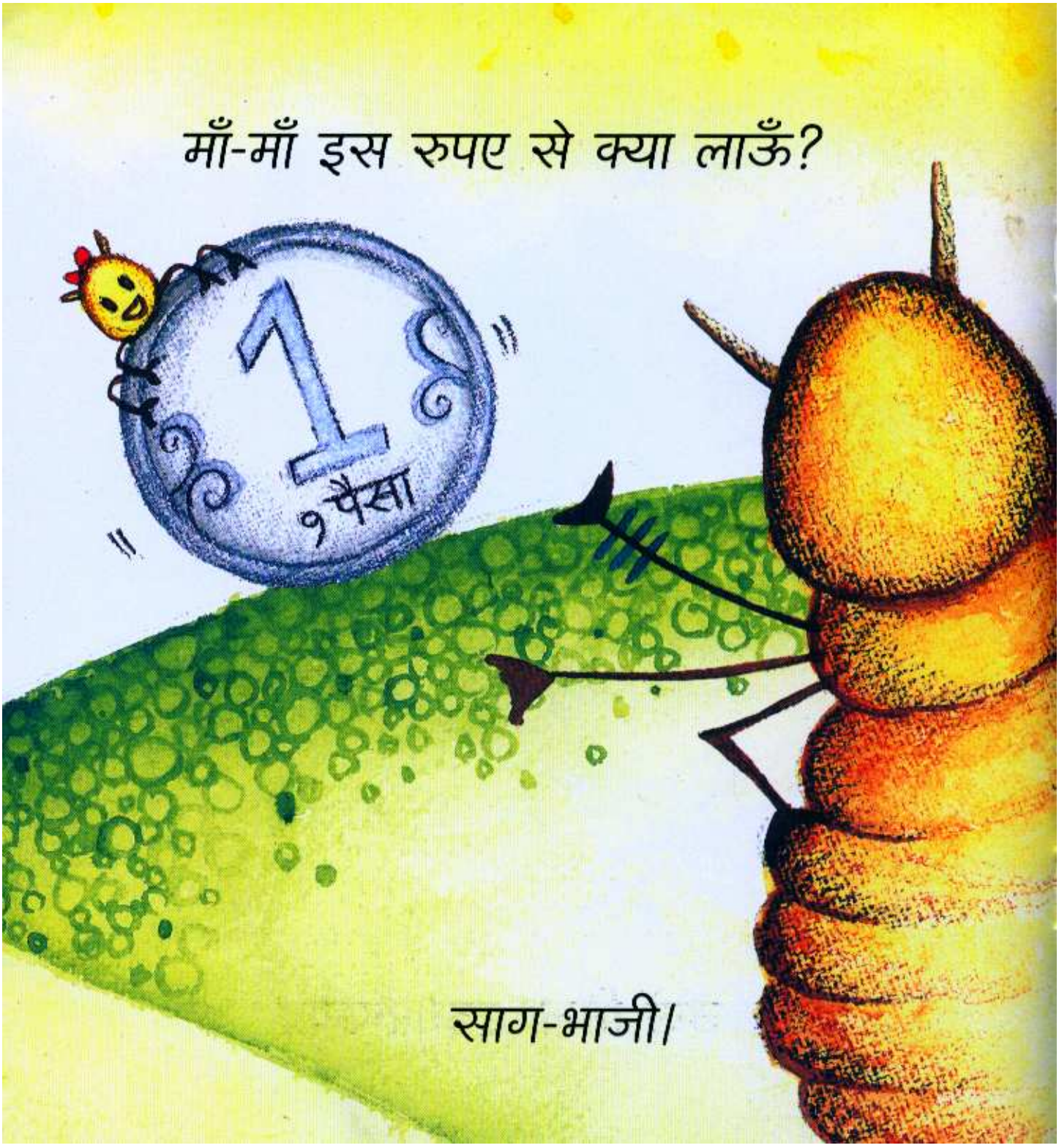
माँ-माँ इस रुपए से क्या लाऊँ?
1
१ पैसा
साग-भाजी।

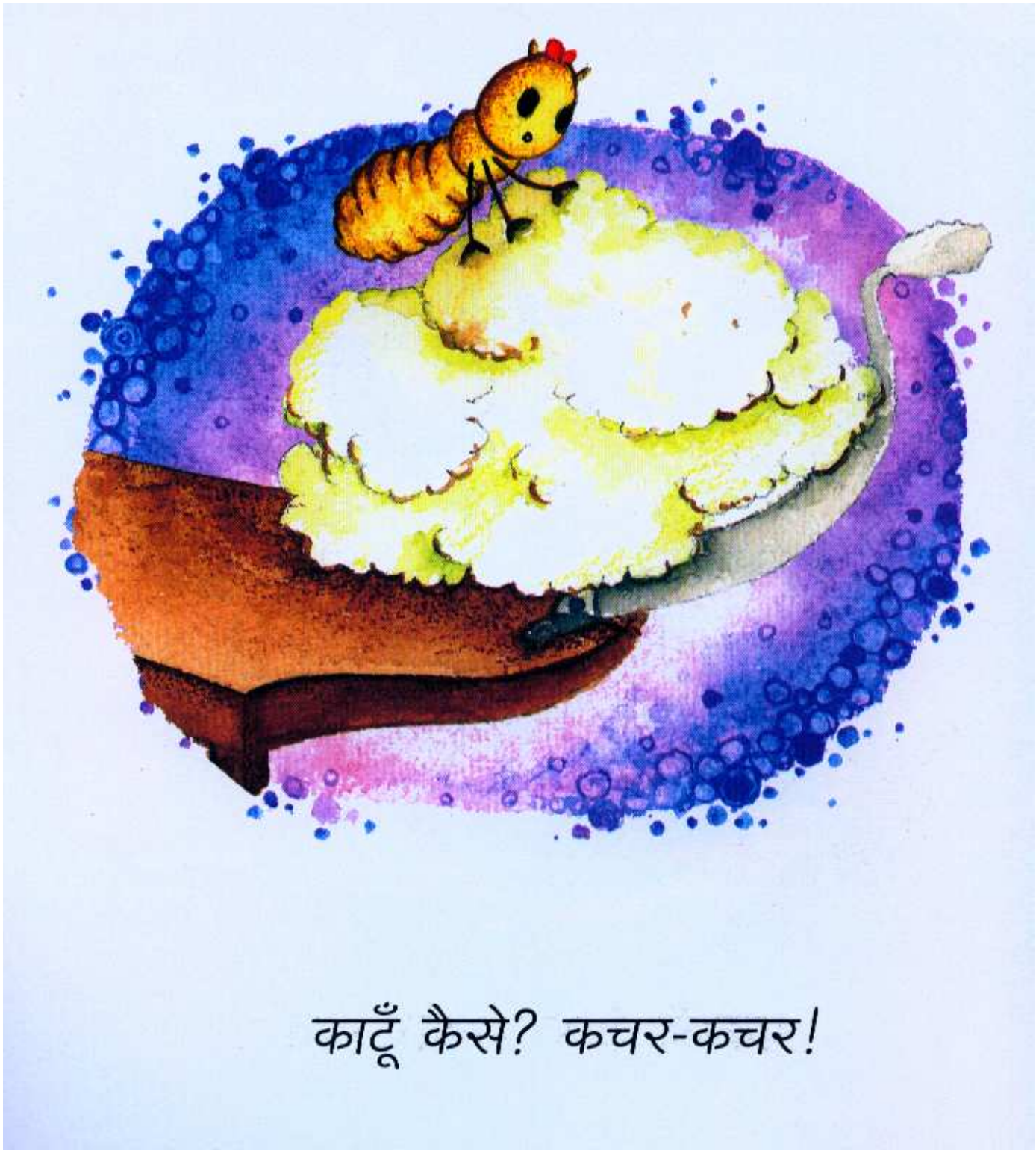

काटूँ कैसे? कचर-कचर!

पकाऊँ कैसे? खदर-खदर!

खाऊँ कैसे? गपर-गपर!

सोऊँ कैसे? बाईं करवट!

और... पादूँ कैसे?

ढम्म-म् ढिश!

जूँ और टू

JOON AUR TOO

एक मराठी पारम्परिक कहानी

मराठी से हिन्दी अनुवादः माधव केलकर

चित्रांकनः सुजाता भागवत, क्रॉपमार्क्स डिज़ाइन, cropmarx@gmail.com

© QUEST व एकलव्य / जुलाई 2011 / 5000 प्रतियाँ

इस किताब की सामग्री का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का ज़िक्र अवश्य करें तथा एकलव्य व QUEST को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग की अनुमति के लिए एकलव्य एवं QUEST को लिखें।

यह किताब क्वालिटी एज्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (QUEST), पुणे द्वारा विकसित की गई है। (www.quest.org.in)

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट तथा नवजबाई रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 200 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

ISBN: 978-93-81300-02-2

मूल्यः ₹ 30.00

यह किताब मराठी (ISBN: 978-93-81300-04-6) एवं अँग्रेज़ी (ISBN: 978-93-81300-03-9) में भी उपलब्ध है।

प्रकाशकः **एकलव्य**

ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोनः (0755) 268 7589

हम वयस्कों के जीवन में जिस तरह नाटक, सिनेमा, महफिल, चित्र प्रदर्शनी आदि मन को आनन्द, सुकून और रूमानी खुशी देने वाली चीज़ों में शुमार हैं, बच्चों के जीवन में वही स्थान कहानियों का है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि जूँ और टू की कहानी एक उत्तम बालकथा है। इसमें अकल को आराम दिया गया है; भाषा की मौज है; मन का रंजन है और हास्य भी है। जूँ और टू जैसे चरित्र मनोरंजक हैं। खाना खाना, पैसा मिलना, सब्ज़ी लाना वगैरह रोज़मर्रा के जीवन की आम बातें होने की वजह से इसे समझने के लिए दिमाग पर ज़ोर नहीं डालना पड़ता। इसलिए कहानी कहानी ही रहती है, वह सीख या शिक्षा नहीं बन जाती। हाँ, सब्ज़ी लाकर बनाना और खाना जैसे आम घरेलू विषय को इतनी खूबसूरती से कहानी में पिरोने की कहानीकार की करामात पर ताज्जुब ज़रूर होता है।

– ताराबाई मोडक

एकलव्य

मूल्य: ₹ 30.00

ISBN: 978-93-81300-02-2

क्वालिटी एज्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट द्वारा निर्मित

parag SRTT एवं NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित